SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

राम की शक्ति पूजा' में रचना वैशिष्ट्य

आशीष कुमार तिवारी
सह-प्राध्यापक (हिंदी)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

राम की शक्ति पूजा' सही अर्थों में 'निराला' की प्रतिनिधि काव्य रचना कही जा सकती है। प्राचीन गाथा-परम्परा में अलौकिक तत्त्वों, लोक विश्वासों तथा अतिरंजनापूर्ण वर्णनों का समावेश रहता है। किन्तु 'राम की शक्ति पूजा' में लम्बी कविता के तनाव और अन्तहीन अंत, आधुनिक परिवेशगत जटिलताओं, संलिष्टताओं के साथ, वाह्य संघर्ष के विभिन्न आयाम और आन्तिरक द्वन्द मिलकर इस कविता की रचना-प्रक्रिया को जटिल बनाते हैं। 'राम की शक्ति पूजा' के संरचनात्मक विश्लेषण में लम्बी कविता के तत्त्वों के आधार पर रचना विधान एवं मूल्य चेतना की दृष्टि से सकारात्मकता के साथ-साथ कुछ कठिनाइयों की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है।' राम की शक्ति पूजा' में वर्णित राम-रावण की लड़ाई युद्ध के मैदान में तो होती ही है साथ ही साथ कवि के मन में भी यह लड़ाई छिड़ी हुई है। सत्य और असत्य का यह संघर्ष केवल निराला जी के मन में ही नहीं हुआ था बल्कि प्रत्येक मानव के मन में यह संघर्ष होता है। इस दृष्टि से राम सत्य और सात्विक दृष्टि के प्रतीक हैं और रावण असत्य और तामसिक वृत्ति का प्रतीक। मन की विकासात्मक भूमि सत् और असत् या सात्त्विक और तामसिक वृत्ति के अन्तर्द्वन्द को झेलती ही है। सत्य को प्राप्त करने की यह अनिवार्य प्रक्रिया है। निराला यहाँ राम के व्यक्तित्व में अपने ही व्यक्तित्व का प्रक्षेपण करते हैं। निराला भी राम की भांति अपने जीवन में घोर संघर्ष करते रहे हैं और राम की भांति अन्त में उनका प्राप्तव्य भी उन्हें मिल जाता है।

बीज शब्द

विश्लेषण, सात्त्विक, तामसिक, सकारात्मकता, अन्तर्द्वन्द।

भूमिका

'राम की शक्ति पूजा' का उद्देश्य है, लोगों को शक्ति की मौलिक कल्पना समझाना और उन्हें शक्ति के महत्व को समझाना। इस कविता में निराला ने राम को अंतर्द्वदों से मुक्त कराकर लौकिक धरातल पर स्थापित किया है। इस कविता में निराला ने शक्ति की मौलिक कल्पना को दिखाया है। 'राम की शक्ति पूजा' की कथा दो स्थानों से संकलित की गई है। 'देवी भागवत' में रावण वध के समय राम की शक्ति-आराधना का उल्लेख है। इसमें नीलकमल चढ़ाने की कथा नहीं है। इस मूल स्रोत के अतिरिक्त इस कथा का एक स्रोत और है- 'कृत्तिवास की बंगला रामायण'। उसमें राम-रावण की गुद्ध कथा पन्द्रह प्रसंगों में समाप्त की गयी है। यदि दोनों कथानकों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो ज्ञात होगा कि निराला ने कृत्तिवास से बहुत कुछ ग्रहण किया है। निराला ने अपनी कथा को मनोवैज्ञानिक भूमि पर अधिष्ठित कर दार्शनिक भावना के समावेश द्वारा उसे आधुनिक युग के अनुकूल बनाया है।

शोध विस्तार

राम कि शक्ति पूजा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित प्रसिद्ध लंबी कविता है जिसके आरम्भ में राम-रावण के अनिर्णित समर का अतिशय उदात्त चित्र प्रस्तुत किया गया है। युद्ध का ऐसा यथार्थ और जीवंत दृश्य कदाचित ही किसी काव्य में मिले। हतचेतन राम अपनी वानरी सेना के साथ लौट पड़े। सेना विभिन्न स्थविर दलों की भांति राम के पीछे-पीछे चली। राम के धुनष की प्रत्यंचा ढीली हो गई है। जटामुकुट अस्त-व्यस्त हो उठा है। सुवेलगिरि पर आकर राम अत्यंत संशयग्रस्त हो उठे। उनमें रावण की जय का भय समा गया। युद्ध के लिए उद्यत उनका मन हार जाता है। हार के इन्हीं क्षणों में उन्हें विदेह उपवन में सीता-मिलन का स्मरण हुआ। यह स्मृतिजन्य मिलन हार के बाद नारी के आंचल में मुँह छिपा लेने का मिलन नहीं है और न सर्वत्र से अपने को हटाकर श्रांगारिक अनुभूतियों में खो जाने का मिलन है। यह प्रेम का रचनात्मक मिलन है जो मन के आवेग और उत्साह को जगाकर क्रियात्मक बना देता है। किंतु उस दिन के युद्ध में अपने दिव्यास्त्रों के खण्डित होने से असफलता की याद में वे पुनः चिंताकुल हो जाते हैं। उन्हें गर्वोन्मत्त रावण का अट्टाहस सुनाई पड़ता है-

"फिर सुना-हँस रहा अट्टहास रावण खल-खल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल"।[1]

यह देखकर हनुमान समस्त व्योम को ग्रस लेने के लिए आगे बढ़ते हैं किंतु अपनी माता अंजना के समझाने से वे पुनः सामान्य हो भूमि पर उतर आते हैं। विभीषण राम को युद्ध के लिए उत्साहित करते हैं। वे कहते हैं कि लक्ष्मण, जांबवान, सुग्रीव, अंगद आदि सभी वीर आपके साथ हैं और युद्ध भी वही है फिर असमय ही आपके मन में पराजय का भाव क्यों जागा?

"रघुकुल गौरव लघु हुए जा रहे तुम इस क्षण,
तुम फेर रहे हो पीठ हो रहा जब जय रण।"[2]

तब राम उदास भाव से कहते हैं "मित्रवर विजय होगी न समर" महाशक्ति रावण से आमन्त्रित होकर उसकी रक्षा कर रही है। वे एक महत्त्वपूर्ण नैतिक प्रश्न उठाते हैं कि जिधर अन्याय है उधर ही विजय भी है। अंत में जांबवान की सलाह मानकर वे देवी आराधना का संकल्प करते हैं। इसके पूर्व वे विकल्पात्मक स्थिति में थे। हनुमान देवीदह से एक सौ आठ कमल ले आते हैं। आठ दिन की साधना के बाद देवी उनके परीक्षार्थ एक कमल उठा ले जाती है। यज्ञ के पूर्ण होने के समय इस तरह के आकस्मिक विघ्न से वे अत्यंत पीड़ित हो उठते हैं। तभी उनके मन में विचार आता है कि माता उन्हें 'राजीवनयन' कहकर पुकारा करती थीं। वे देवी को एक आँख देने के लिए प्रस्तुत हो गए। ब्रह्मास्त्र उठाकर ज्यों ही अपनी आँख भेदने के लिए वे तैयार हुए कि भगवती ने उनका हाथ थाम लिया। उनकी साधना से प्रसन्न होकर देवी ने उन्हें वरदान दिया -

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन,
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।"[3]

यह समापन एक ओर दार्शनिक है तो दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक। कहना न होगा कि यह छायावादी पीढ़ी का आत्मशक्ति के प्रति निष्ठा का जयघोष है। लम्बी कविता में नाटकीयता, विचार तत्त्व, सृजनात्मक तनाव, प्रदीर्घता, अन्तहीन अन्त एवं अन्विति तत्त्व मिलकर कविता

को रूप प्रदान करते हैं। 'राम की शक्ति पूजा' में इन तत्त्वों का संधान हमारा यहाँ अभिप्रेत है। लम्बी कविता के रचना विधान में नाटकीयता एक प्रमुख तत्त्व है, और 'राम की शक्ति पूजा' नाटकीय मोड़ों और नाटकीय संवादों से पूर्णतः ओतप्रोत है। इस पूरी लम्बी कविता में नाटकीय छन्दों विधान की शक्ति ऐसी है कि कविता एकदम अभिभूत कर देती है। यहाँ छोटी-छोटी भाव-भंगिमाएँ नाटकीय मोड़ों का अन्दाज देती हैं। इस लम्बी कविता में नाटकीय मोड़ों की कुछ भंगिमाएँ इस प्रकार हैं -

"रवि हुआ अस्तः ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर।"[4]

कविता समर के नाटकीय विवरण से प्रारम्भ होती है और राम की चिन्ता से उनकी सिद्धि तक विभिन्न दृश्यों में विभक्त होकर आगे बढ़ती है। पूरी कविता एक प्रकार से राम और राम की शक्ति के बीच नाटकीय संवाद है और ये सम्वाद दोनों प्रकार के हैं-अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी। 'राम की शक्ति पूजा' में तीन प्रमुख नाटकीय लक्षण हैं -

(i) ध्वनि संरचना बहुत नियमित है,
(ii) धनाक्षरी ही प्रायः हैं, (जहाँ कहीं उसमें भंग है वहाँ नाटकीय मोड़ ही उपलक्षित हैं)
(iii) तुक संरचना की नियमिति है।

निराला जी ने कविता को सूर्यास्त से आरम्भ करके सुन्दर नाटकीय पृष्ठभूमि दी है साथ ही साथ सुन्दर प्रतीकों का प्रयोग करके इस नाटकीयता को कई गुना बढ़ा दिया है। शाम का समय हताशा, निराशा और थकान को प्रतिबिम्बित करता है।

कविता में दूसरा नाटकीय मोड़ तब उपस्थित होता है जब रावण की राक्षस सेना, आज युद्धभूमि में मिली सकारात्मक स्थिति से उल्लासित होकर, धरती को रौंदती हुई, पृथ्वी को हिलाती सी, अपने हर्षोल्लास से आकाश को गुंजायमान करते हुए वापस लौट रही है। इस दूसरे नाटकीय मोड़ में पहले दृश्य से विपरीत स्थिति दिखलाई पड़ती है -

"लौटे युग दल, राक्षस-पदतल पृथ्वी टलमल
बिंध महोल्लास से बार-बार आकाश विकल"[5]

कविता का तृतीय दृश्य रहस्यात्मक होने के कारण अत्यधिक नाटकीय हो उठा है। अमावस्या की काली रात्रि और आकाश में निबिड अन्धकार। इस अन्धेरे में दिशाओं का ज्ञान तक नहीं हो पा रहा था। उस शान्त वातावरण में केवल पर्वत के पीछे की ओर स्थित विशाल सागर निर्बाध रूप से गर्जना कर रहा था। पर्वत भी अपने स्थान पर एक ध्यान मग्न योगी की भाँति स्थिर जान पड़ता था। उस समय केवल एक मशाल जल रही थी जो निस्तब्ध वातावरण को और भी गंभीर तथा नाटकीय बना रही थी। पूरा का पूरा वातावरण इस दृश्य में नाटकीय जान पड़ता है -

"है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार।
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।"[6]

प्रस्तुत पंक्तियों में 'अमा-निशा' 'गगन घन अंधकार' के द्वारा कवि ने अपनी व्यक्तिगत मनोभूमि को, अंधकार की सघनता का बिम्ब दिखाकर, निज-संघर्षों को व्यंजित किया है। यह अंधकार कवि के जीवन में चल रहे अभावों, उतार-चढ़ावों का अंधकार है जिसे कवि ने कविता में बुद्धि कौशल से नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया है।राम निराशा से भर उठे हैं और अपनी विजय को असंभव मान लिया है, मन की विचलित अवस्था में वे अचानक सोता की स्मृतियों में खो जाते हैं। उनके मन में सीता-स्मृति ऐसे जगती है जैसे घने अन्धकार से पूर्ण बादलों के मध्य बिजली चमक उठी हो। 'सीता कुमारिका' छवि कहकर कवि ने पुनः नाटकीय मोड़ देकर यह प्रकट किया है कि उस समय राम का सीता के साथ विवाह नहीं हुआ था।

ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत देखते हुए निष्पलक याद आया उपवन विदेह का प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण, पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन हनुमान राम के चरणाविन्द में बैठे हैं जो अस्ति-नास्ति के प्रतीक हैं राम के चरण अस्ति-नास्ति के एक रूप होने के साथ-साथ अप्रतिम गुणों से भी युक्त हैं। साधना की स्थिति में साधक इन्हीं गुणों का जय करते हैं। राम पदमासन लगाए बैठे हैं। राम का बाँया हाथ अपने दाहिने पैर पर तथा दाहिने हाथ

की हथेली पर बाँया पैर प्रतिष्ठित है। राम की यह मुद्रा उन्हें सच्चिदानन्द स्वरूप में कविता में प्रतिष्ठित करती है -

"बैठे मारूति देखते रामचरणारविन्द
युग अस्ति नास्ति के एक रूप, गुण-गण-अनिन्ध।
साधना-मध्य भी साम्य-वाम. कर दक्षिण-पद
दक्षिण-कर-तल पर वाम चरण, कपिवर गदगद।"[7]

'राम की शक्ति पूजा' में नाटकीयता एक बार पुनः मोड़ लेती है, जब हनुमान अपने विकाराल रूप में आकाश में पहुँचते हैं और वहाँ अपनी माता अंजना को देखते हैं। वे विस्मय से भर उठते हैं। अंजना वेषधारी उस महाशक्ति ने पवनपुत्र से कहा- जब तुमने बचपन में सूर्य को निगल लिया था तब तुम निरे अबोध, अज्ञानी एवम बालबुद्धि थे। लगता है तुम्हें वही भाव बार-बार व्याकुल कर रहा है। यह बड़ी लज्जा की बात है कि माता अर्थात् मैं तुम्हारी उद्दण्डताओं को सहन कर लेती हूँ और कुछ भी नहीं कहती। क्या राम ने तुम्हें इस प्रकार की कोई आज्ञा दी है? क्या राम तुम्हारे इस अनुचित कृत्य को सहन कर सकेंगे? तुम सेवक हो, तुम्हें यह सब शोभनीय नहीं है। माता की ऐसी ज्ञान की स्नेहयुक्त वाणीं सुनकर हनुमान नम्र हो जाते हैं और धीरे-धीरे आकाश सी नीचे उतर आते हैं, अपने इस कार्य के अनर्थ की कल्पना कर भय के कारण दीन हो राम के चरणों में बैठ जाते हैं। समस्त पंक्तियों में नाटकीय-संवाद से नाटकीयता जगह-जगह अभिव्यक्त होती है। हनुमान का बड़ा आकार में आना फिर लघु हो जाना नाटकीयता को जन्म देता है -

"बोली माता- "तुकने रवि को जब लिया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल,
यह वही भाव कर रहा तुम्हें व्याकुल रह-रह
यह लज्जा की है बात कि माँ रहती सह-सह।"
'कपि हुए नम्र, क्षण में माता छवि हुई लीन,
उतरे धीरे-धीरे गह प्रभु-पद हुए दीन।"[8]

आगे कविता पुनः नाटकीय मोड़ के साथ अग्रसर होती है जब राम के खिन्न मुख को देखकर विभीषण का संवाद प्रस्तुत होता है। विभीषण राम को संबोधित करते हुए कहते हैं-

आज प्रसन्न वदन वह नहीं देखकर जिसे समग्र वीर-वानर

भल्लूक विगतन्श्रम हो पाते जीवन-निर्जर"[9]

नाटकीय संवादों और उतार-चढ़ाव से भरी हुई लम्बी कविता उस समय नाटकीयता के चरम पर पहुँचती है जब हताशा में राम जीवन-भर के दुःखों को एक साथ कह उठते हैं। राम के जीवन में यह विषमता निराला के ही अपने जीवन की विषमता है। सच तो यह है कि जीवन में निराला ने जो पापड़ बेले उनसे राम भी दामन बचा नहीं पाए हैं।निराला ने अपने अन्तर्द्वन्द्व को राम मे चित्रित किया है -

"धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"[10]

जाम्बवान के प्रस्तावों को स्वीकारते हुए राम शक्तिपूजा में लीन हो जाते हैं। पुरश्चरण करते हुए वे ऊर्ध्वगमन करते जाते हैं। कविता में अन्तिम नाटकीय मोड़ तब उपस्थिति होता है जब राम अपनी सिद्धि के अन्तिम पड़ाव पर पहुँचते हैं। परीक्षा करते हुए देवी राम का अंतिम कमल चुरा लेती हैं। अपना एक नेत्र देवी को प्रदान कर पुरश्चरण पूरा करने के संकल्प के रूप में राम की श्रद्धा को देखकर दुर्गा ने राम को आशीर्वाद दिया कि हे नवीन अवतार पुरूषोत्तम ! तुम्हारी जय होगी जय होगी। यह कहकर महाशक्ति राम के बदन में प्रविष्ट हो गई -

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।

कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।"[11]

यद्यपि 'राम की शक्ति पूजा' क्लिष्ट और संस्कृतनिष्ठ तत्सम भाषा में रचित है, फिर भी लम्बी कविता का प्रमुख तत्त्व अन्विति हमें इसमें दिखाई पड़ती है। 'राम की शक्ति पूजा' अपने

कथ्य, तत्सम शब्दावली, विभिन्न प्रसंग और संदर्भ संकेतों को एक सूत्रता में बाँधे रखती है। 'राम की शक्ति पूजा' का गठन जहाँ बिम्बात्मक है वहीं अन्विति भी अखण्डित दिखाई पड़ती है। बिम्ब संकेन्द्रण पर आग्रह न होकर संदर्भों और प्रसंगों की सन्निधि और टकराव पर बल दिया गया है। परिस्थितिजन्य मानसिक तनाव लम्बी-कविता के लिए काफी नहीं, ये दबाब चेतनागत भी होने चाहिए।" 'राम की शक्ति पूजा' में राम के मन में अर्थात दूसरे रूप में निराला के मन में, परिस्थितिजन्य मानसिक तनाव तो दृष्टिगोचर होता ही है साथ ही साथ उनके जीवन-दर्शन में चेतनागत तनाव भी दिखाई पड़ता है तभी निराला कहते हैं-

"रावण अधर्मरत भी अपना, मैं हुआ अपर"

"अन्याय जिधर है उधर शक्ति।"[12]

'राम की शक्ति की पूजा' में हमें नाटकीयता, सृजनात्मक तनाव के साथ अन्विति अन्तहीन अन्त और प्रदीर्घता की मनोभूमियाँ भी पूर्णतः दिखाई पड़ती हैं। आलोच्य कविता सृजनात्मक तनाव, अन्विति, प्रदीर्घता, नाटकीयता और अंतहीन अन्त जैसे कलेवरों से यह लम्बी कविता सुगठित एवम संयोजित देखी जा सकती है।

निष्कर्ष

'राम की शक्ति पूजा' लम्बी कविता के रचना विधान और मौलिक रचनात्मक सन्दर्भ में एक महाआयामी कृति है। नाटकीयता इसका प्राथमिक वैशिष्ट्य है। प्रत्येक कथा खण्ड एक अभिनव दृश्यात्मक लिए हुए है। नाटकीय चित्रमयता तो पूरी रचना में ही व्याप्त है। 'राम की शक्ति पूजा' में लम्बी कविता के रचना विधान के ये तत्त्व कविता को उदात्त और महान रचना सिद्ध करते हैं। अब तक हमने प्रस्तुत कविता 'राम की शक्ति पूजा' में लम्बी कविता की रचना धर्मिता और उसके विविध तत्त्वों के आधार पर उसका विवेचन-विश्लेषण किया, और निष्कर्ष के रूप में जाना कि प्रस्तुत कविता में कवि ने लम्बी कविता के विविध तत्त्वों को पूर्ण रूप से अनुस्यूत किया है साथ ही निराला की लम्बी कविताओं का एक विशिष्ट तत्त्व भी है और वह पौराणिक आख्यानात्मकता। यद्यपि पौराणिक आख्यानों को कवि ने पूर्णता में न लेकर कुछ

बिन्दुओं को ही लिया है और लम्बी कविता को अपने विचारों अन्तर्द्वन्द्वों और काव्य-कौशल से पूर्णता प्रदान की है।

संदर्भ सूची

1. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 152
2. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 156
3. अनामिका (काव्य संग्रह)सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 165
4. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 176
5. राग-विराग(काव्य संग्रह)/सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पृष्ठ 62
6. राग-विराग(काव्य संग्रह)/सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पृष्ठ 62
7. राग-विराग(काव्य संग्रह)/सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पृष्ठ 64
8. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 151
9. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 152
10. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 153
11. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 155
12. अनामिका (काव्य संग्रह)/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ 156